# पाठ-18 कुटज

## मुख्य विषय

यह आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का ललित निबंध है जिसमें एक छोटे से वृक्ष 'कुटज' के माध्यम से जीवन का बड़ा संदेश दिया है। यह शिवालिक की नीरस और कठोर चट्टानों में उगने वाला एक ठिगना सा वृक्ष है। अपराजेय जीवनी-शक्ति का स्वामी कुटज नाम और रूप दोनों में अद्वितीय है। सूखी, नीरस और कठोर चट्टानों के मध्य प्रतिकूल परिस्थितियों में जीते हुए भी वह पुष्पों से लदा रहता है तथा अपनी रक्षा करता हुआ हमें भी जीवन का उद्देश्य सिखाता रहता है।

कुटज के समान हमें अपने संकीर्ण स्वार्थ के लिए नहीं, वरन् परमार्थ के लिए स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर, कर्मठ, त्यागी और दूसरों की भलाई के लिए भी कुछ सोचना चाहिए। सही प्रकार से जीने की कला न आना ही मूल समस्या है। जिस दिन आप यह कला सीख जाएँगे, उस दिन आपका जीवन सुखमय हो जाएगा। कितनी ही मुश्किलें क्यों न आएँ, आप हिम्मत नहीं हारेंगे, परेशान नहीं होंगे।

## मुख्य बिंदु

**निबंध के तत्वों के आधार पर समीक्षा** :-

1. प्रस्तावना - हिमालय का पाद देश ऐसा है जहाँ कहीं कोई हरियाली नहीं। दूब तक सूख गई है। चारों ओर फैली हैं-काली-काली चट्टानें और शुष्क रक्ताभ रेती। बस कहीं-कहीं बहुत दूर-दूर दिख जाते हैं तो कुछ सूखे झाड़-झंझाड़। यहाँ की इन्हीं विशेषताओं के कारण इनको शिव के जटाजूट के निचले हिस्से का पर्याय नाम 'शिवालिक' दे दिया गया है। लगता है कि यहाँ बस शिव जैसे अद्वितीय, कठिन, विषम परिस्थितियों को सह सकने वाले देवता ही रह सकते हैं।पर आश्चर्य की बात तो यह है कि एक ठिंगना-सा वृक्ष भी यहाँ इन्हीं जटिल परिस्थितियों में जी रहा है। सिर्फ जी ही नहीं रहा वरन् हँस-हँस कर, साहस से चट्टानों को भेद कर अपने लिए जीवन-जल तलाश रहा है तथा हरा-भरा बना रहकर दूसरों को किसी भी परिस्थिति में हार न मानने की प्रेरणा दे रहा है। वह चारों ओर फैली चट्टानों और रेती से भी, जहाँ जल का नामो-निशान नहीं होता, अपना भोजन कहीं गहरे से खींच लाता है और जीवित बना रहता है।

2. विषय-वस्तु - निबंधकार कहता है कि वह कुटज पर इसलिए बलिहारी हैं, क्योंकि वह नाम और रूप दोनों ही दृष्टियों से अपराजेय है, कभी हार नहीं मानने वाला है। यह गुण उसके सौंदर्य में चार चाँद लगा देता है। उसका नाम हज़ारों वर्षों से कुटज ही है, बदला नहीं। जबकि इस बीच अनेक पेड़-पौधों, वस्तुओं के नाम बदल गए। कितने नाम लुप्त हो गए। उनको दुनिया भूल भी गई। पर कुटज का नाम ज्यों का त्यों है। सर्वाधिक सराहनीय उसकी जिजीविषा (जीने की प्रचंड इच्छा) है। चारों ओर तीव्र झुलसाती धूप तथा धधकती लू के तेज़ झोंके; दूर-दूर तक फैला निःशब्द सन्नाटा और नीचे न प्राणदायी मिट्टी, न खाद, न पानी। बस गर्मी से जलती, तपती चट्टानें हैं, जहाँ प्राणों को पुलकित करने वाली, जीवन को रसमय बनाने वाली कोई परिस्थितियाँ नहीं है। पर कुटज है कि फिर भी जिए जा रहा है।

मजबूरी में नहीं जी रहा है, और न ही जीवन को बोझ मानकर जी रहा है। वरन् वह तो प्रसन्नतापूर्वक, हँस-हँस कर जी रहा है। विषम परिस्थितियों से घबराकर वह निरुत्साहित नहीं हुआ, उदास, अकर्मण्य नहीं हुआ। वरन् उसने तो निरंतर संघर्ष किया तथा अंततः जीवन के कुरुक्षेत्रा से विजयी होकर निकला। उसने सदैव यह संदेश दिया कि कैसी भी कठिन परिस्थितियाँ क्यों न आ जाएँ। कभी भी हार मत मानिए। जीवन को सही प्रकार से जीना न छोड़िए। सहिष्णु, दृढ़ और साहसी बनिए तो सफलता और विजय आपके कदम चूमेगी।

लेखक के मन में प्रश्न उठता है कि कुटज क्या केवल जी रहा है? उसे जीना है मात्र इसीलिए जी रहा है अथवा वह दूसरों को कुछ संदेश भी दे रहा है, परमार्थ भी सोच रहा है? लगता है कि कुटज का संपूर्ण जीवन सोद्देश्य है। वह पग-पग पर हमें जीवन का आदर्श सिखाता चलता है। वह अपने जीवन का उदाहरण हमारे सामने रखकर हमें सिखाता है कि आत्मनिर्भर बनिए, भीख मत माँगिए, किसी पर आश्रित मत रहिए। ईश्वर के अतिरिक्त किसी से मत डरिए। नीति और धर्म के उपदेश मात्र मत दीजिए कर्मशील बनिए, किसी की चापलूसी मत कीजिए। लेखक का कहना है कि छल-कपट छोड़ दो, हीन भावना से ग्रसित न हो, चाटुकार मत बनो। संयमी, विवेकवान, उदात्त, संघर्षशील और स्वाभिमानी बनो।

यहाँ द्विवेदी जी ने कुटज की जीवन शैली के माध्यम से वर्तमान जीवन की कुत्सा, स्वार्थपरता, चाटुकारिता, भ्रष्टाचार, लोभ, लिप्सा, मोह, आसक्ति, प्रपंचों से भरी राजनीति, अंधविश्वासों, लोक-कल्याण के नाम पर हो रहे छल-कपट, असत्य, आडंबर आदि पर करारी चोट की है तथा व्यंग्यात्मक तरीके से मानव-मूल्यों के ह्रास पर चिंता व्यक्त की है।

3. लेखक का विचार है कि सच्चा जीवन-दर्शन यही है कि व्यक्ति कर्म करते रहें तथा यथासंभव अच्छे कर्म करने का प्रयास करें। संसार में कोई भी प्राणी किसी का अपकार अथवा उपकार तब तक नहीं कर सकता जब तक ईश्वर न चाहे। हमारे अच्छे-बुरे कर्मों का संचालक, भाग्यविधाता, कर्ता तो वस्तुतः वही एक ईश्वर है। हम तो मात्र उसकी इच्छानुसार कर्म कर रहे हैं।

द्विवेदी जी उपसंहार में हमें जीवन-दर्शन समझाते हुए बताते हैं कि वस्तुतः सुख और दुख तो व्यक्ति के मन के अनुरूप होते हैं। कोई भी सुख सबके लिए सुख का कारण नहीं हो सकता तथा कोई भी दुख सबको दुखी नहीं कर सकता। जो एक व्यक्ति के लिए "सुखदायक" परिस्थिति है वही दूसरे के लिए "दुख" का कारण भी हो सकती है। यदि किसी का मन कमजोर, अस्थिर या चंचल है, अपने वश में नहीं है तो बाह्य जीवन की परिस्थितियों से वह बहुत जल्दी प्रभावित हो जाता है, सुखी अथवा दुखी हो जाता है। उसकी इंद्रियाँ उसके नियंत्रण में नहीं रहतीं और वह सदैव असंतुष्ट रहता है, निष्कर्ष रूप में वह अपनी क्षुद्र स्वार्थ भावना को लेकर कभी किसी की खुशामद करता है तो कभी दाँत निपोर कर किसी की जी हजूरी करता है। उसका आत्म-सम्मान, आत्म-गौरव, आत्म-विश्वास सब समाप्त हो जाता है तथा वह अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए झूठी शान दिखाता है, दूसरों को अपने समान स्तर पर लाने, हानि पहुँचाने के लिए कुटिल चालों के जाल बिछाता है तथा दूसरों के इशारों पर नाचता है। इस प्रकार वह निरंतर पतन के मार्ग की ओर अग्रसर होता चला जाता है।

कुटज ऐसा नहीं करता। वह छल-कपट, राग-द्वेष, मिथ्याचार, षड्यंत्र, असत्य सबसे दूर है, स्वाधीन है। उसका मन अपने वश में है इसलिए वह कामनाओं से मुक्त आनंदमयी वैरागी है-बिल्कुल राजा जनक की भाँति। राजा जनक भी संपूर्ण भोगों का भोग करते हुए सदैव उनसे दूर रहे, इस तथ्य से अवगत रहे कि ये सब मिथ्या मोह है। कुटज भी इसी तरह जीते हुए मानो घोषणा करता है कि वह अपने संकीर्ण स्वार्थ के लिए कभी पथ-भ्रष्ट नहीं होता, दूसरे के मन को टटोलता नहीं फिरता। अपनी इच्छाओं में भटक नहीं जाता। वह तो इनसे परे निरासक्त, निर्लिप्त है। उसने अपने मन को वश में कर लिया है, उसे जीत लिया है और अब कभी उसका मन, उस पर हावी हो उसे पराभूत नहीं कर सकेगा।

4. भाषा-शैली - उनकी भाषा सहज स्वाभाविक रूप में प्रयुक्त होती है। उनकी भाषा में बोलचाल के शब्दों की प्रधानता रही है और इसी के माध्यम से वे गंभीर तथ्यों का सरलता से प्रस्तुतीकरण करते चलते हैं। द्विवेदी जी स्वयं प्रचलित भाषा की शब्दावली का प्रयोग करने के पक्षधर थे परंतु संस्कृत के तत्सम् शब्दों को भी स्वीकार करते हैं। निबंध में सूक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों और सूत्र वाक्यों का भी खुलकर प्रयोग किया गया है। निबंध में आचार्य जी ने गवेषणात्मक शैली, लालित्यमय विवेचनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक भावनापूर्ण शैली आदि का प्रयोग किया गया है।

**अपना मूल्यांकन कीजिए**

- 'कुटज' निबंध से आपको क्या शिक्षा मिलती है ? स्पष्ट कीजिए।
- आचार्य द्विवेदी ने एक अदने से पौधे को आधार बनाकर इस निबंध को क्यों लिखा?
- निबंध के तत्वों के आधार पर इस निबंध की समीक्षा कीजिए।